वर्ष ४ अंक ४१-४२
मार्च-अप्रैल २०२२

आर्ष क्रान्ति

वैदिक समाज व्यवस्था के लिए समर्पित



आर्य लेखक परिषद्

ओ३म्

आर्य लेखक परिषद् का मुख पत्र

आर्ष क्रान्ति

मार्च –अप्रैल २०२२



वर्ष–४ अंक–४१,
विक्रम संवत् २०७८
दयानान्दाब्द – १९८
कलि संवत् – ५१२३
सृष्टि संवत –१,९६,०८,५३,१२२

प्रधान सम्पादक
वेदप्रिय शास्त्री
(७६६५७६५११३)

❖

सम्पादक
अखिलेश आर्येन्दु
(८१७८७१०३३४)

❖

सह सम्पादक
प्रांशु आर्य (कोटा)
(८७३९९७९६३०,
९९६३९७०९४०)

❖

सम्पादकीय कार्यालय
महर्षि दयानन्द आश्रम
ग्राम सीताबाडी, केलवाड़ा
जिला–बारां (राजस्थान)
पिन कोड –३२५२१६

अनुक्रम

विषय

१. महर्षि दयानन्द की कार्यप्रणाली (सम्पादकीय)

२. पतली होती तेल की धार देखो...

३. Follow Satyarth Prakash (Intro -4)

४. कर्तव्यबोध और यज्ञबोध कराता है यज्ञोपवीत संस्कार

५. महाकवि नाथूराम शर्मा'शकंर'...

६. मानवता के ज्योतिर्मय पथ के ज्योतिपुंज...

७. तीन उंगली कटाकर भागा

८. सत्य पथ के बलिदानी महाशय राजपाल

९. कविता

१०. इ डगरा

ईमेल – aryalekhakparishad@gmail.com
वेबसाइट – https://aryalekhakparishad.com/
फेसबुक – आर्य लेखक परिषद्

Digital

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द की कार्यप्रणाली

महर्षि दयानन्द वेद को सारे संसार में प्रतिष्ठा दिलाना चाहते थे। वे ऐसा क्यों चाहते थे यह विचारणीय है। संसार में मात्र वेद ही ऐसा धर्म ग्रन्थ है जो मनुष्य को देव बनने की शिक्षा या उपदेश करते हैं और देव बनने के लिए सबसे प्रथम आवश्यकता है सत्य की। वेद के कर्मकाण्ड की शुरुआत यहीं से होती है। वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है *"अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि,तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्,इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।"*

इसका अर्थ है हे परमेश्वर! मैं व्रत का आचरण करूंगा आपकी कृपा से मैं ऐसा कर सकूं, वह मेरा व्रत सिद्ध हो, मैं आज असत्य से हटकर सत्य को प्राप्त होता हूं।

शतपथ के प्रारम्भ में कहा गया है कि –

"इदम हि व्रतं यत् सत्यमेव।।"

जो सत्य है यही व्रत है।

वैदिक कर्मकाण्ड का प्रारम्भ आचमन से होता है जो एक प्रतीकात्मक कृत्य है। वहां पर इसका उद्देश्य बताते हुए कहा गया है कि *"अमेध्यो वै पुरुषः यदनृतं वदति।"* अर्थात् मनुष्य असंस्कृत, अपवित्र है क्योंकि झूठ बोलता है। अतः यह परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं है।

मेध्या आपः,मेध्यो भूत्वा व्रतमुपयाति।
पवित्रं आपः,पवित्र पूतो व्रतमुपयाति।
तेन पूति अन्तरतः।।

अर्थात् जल मेध्य है पवित्र हैं। यह इस क्रिया के द्वारा भीतर से पवित्र होता है।

वैदिक मनुष्य का निर्माण यहीं से प्रारम्भ होता है। महर्षि दयानन्द कहते हैं कि सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द एकमात्र ऐसा महापुरुष है जिसने सत्य शब्द का अत्यधिक प्रयोग किया है और इसी का आग्रह किया है। एक वेदमन्त्र में कहा है कि

"दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृते व्यदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः"।।

अर्थात् प्रजापति परमेश्वर ने सत्य–असत्य के रूप में संसार को रचा है और सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा को रखा है। अर्थात् मनुष्य को सत्य पर श्रद्धा करनी चाहिए और असत्य पर अश्रद्धा। मन, वचन और कर्म में सत्य को स्वीकार किए बिना मनुष्य परिवार समाज और राष्ट्र के उपयोग के लायक नहीं हो सकता। जो सत्यव्रती है, वही आर्य है। कृण्वंतो विश्वमार्यम् का यही तात्पर्य है कि संसार के मनुष्यों को सत्य के प्रति रुचि रखने वाला बनाना है। वैदिक शिक्षा और संस्कार यहीं से प्रारम्भ होते हैं। यह कार्य विश्व के व्यवस्थापक परमेश्वर की साक्षी में रहकर करना होता है। दयानन्द भी अपने कार्य का प्रारम्भ यहीं से करते हैं, जो लोग दयानन्द के अनुयाई हैं और उसके सपनों को साकार करना चाहते हैं उन्हें यह बात दृढ़ता पूर्वक समझ लेनी चाहिए, झूठ की खेती करने वाले आर्य समाज के कदापि योग्य नहीं हैं।

अनिवार्य ब्रह्मचर्य और उच्च चरित्र

इस कार्य योजना का दूसरा महत्वपूर्ण अङ्ग है जन्म से लेकर न्यूनतम पच्चीस वर्ष तक अनिवार्य रूप से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना और विद्यार्जन करना। महर्षि दयानन्द ने इस पर अत्यधिक बल दिया है कि पच्चीस वर्ष से पहले किसी युवक का विवाह नहीं होना चाहिए।

संसार के मनुष्यों को अभी तक भी ब्रह्मचर्य का महत्व समझ में नहीं आया है। वीर्यहीन गृहस्थ न तो बलिष्ठ और बुद्धिमान सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं और न ही स्वयं स्वस्थ और दीर्घायु हो सकते हैं। आश्चर्य है कि मुर्गों, सुवरों, गायों, भैंसों की उन्नत नस्ल बनाने पर तो बहुत ध्यान दिया जा रहा है परन्तु मनुष्य की नस्ल सुधारने में कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जब कि वैदिक ऋषियों ने इसे ही मनुष्य का मुख्य कर्तव्य बताया है। कभी एक कवि ने लिखा था –

सिंहों के बच्चे स्यार हुए मर्दों की नस्ल नामर्द हुई।
सीने सिकुड़े कमरें कमान, चेहरों की रंगत जर्द हुई।
क्यों न हों जब कि इस भारत में, बच्चों के लगे बच्चे होने।
निर्बल जमीन अधपकी हुई में लगे बीज कच्चे बोने।।

यहां बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह, वेश्यावृत्ति जैसी अनेक कुप्रथाओं के कारण संसार भोग–विलास और नफासत का अखाड़ा बन चुका है। इन सब समस्याओं का समाधान महर्षि दयानन्द के

ब्रह्मचर्यव्रत में समाहित है, अन्य कोई उपाय नहीं। दयानन्द तो भारत ही नहीं सारे संसार की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति की बात करते हैं।

माता पिता और आचार्य

मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर जीवन के प्रारम्भिक पच्चीस वर्ष तक का निर्माण दूसरों पर निर्भर होता है। यदि वे योग्य हैं तो निर्माण उत्तम होगा अन्यथा कुछ भी हो सकता है। महर्षि दयानन्द की कार्ययोजना में उक्त तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका निर्धारित की गई है। सबसे अधिक बल माता और आचार्य पर दिया गया है।

अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में वे कहते हैं कि ''वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् जिसके माता और पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना अन्य कोई नहीं करता। ***प्रशस्ता धार्मिकी, विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्*** जिसकी माता ठीक मार्गदर्शिका, धार्मिकी और विदुषी है, वही सच में माता वाला है। धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।''

इसके आगे उन्होंने माता–पिता को शिक्षा और औषधियों के द्वारा धर्म शास्त्र और आयुर्वेद के आश्रय से उत्तम सन्तान निर्माण करने की प्रेरणा दी है। उनके अनुसार सभी स्त्रियों को सुशिक्षित करना अनिवार्य है।

खेद की बात है कि एक प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक को भी एक दो वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है। अन्य अनेक छोटे मोटे पदों पर नियुक्ति से पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था है, किन्तु एक माता–पिता को माता पिता बनने से पहले किसी तरह के प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इस पर अत्यधिक बल दिया है।

इस विषय पर पृथक् से एक ग्रन्थ लिखा जाना चाहिए और आर्यसमाज भवनों में ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र चलाए जाने चाहिए। बहुत पहले उत्तर प्रदेश के तिलहर निवासी श्री चिम्मनलाल वैश्य ने नारायणी शिक्षा नाम का एक ग्रन्थ लिखा था जो बहुत उपयोगी था, वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। महर्षि दयानन्द ने गर्भावस्था में पति–पत्नी के लिए गर्भस्थ शिशु के पोषण रक्षण से सम्बंधित आहार विहार और व्यवहार पर पर्याप्त निर्देश दिए हैं जिनमें कामुक, कुचेष्टा, अभद्र संवाद, मादक पदार्थों और मांस भक्षण का निषेध किया गया है। इसके लिए उनके सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि नामक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए।

बालपोषण और शिक्षण

शिशु के जन्म के पश्चात् पांच वर्ष तक माता, छठे से आठवें वर्ष तक पिता और उसके पश्चात् आचार्य को यह दायित्व दिया गया है कि बालक का पालन पोषण रक्षण और शिक्षण कैसे करें। यह प्रकरण बहुत ही उपयोगी है।

सर्व प्रथम माता को निर्देश है कि वह बालक को सभ्य बनाने का प्रयत्न करे और किसी भी अङ्ग से कुचेष्टा न करे। व्यर्थ के क्रीड़ा, रोदन, हंसी, लड़ाई, हर्ष शोक, ईर्ष्या द्वेषादि करने से बालक को बचाए। जिस तरह सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि रखने वाला बने वैसा यत्न करे। बालक को बोलना सिखाना भी माता का ही दायित्व है। जिस प्रकार बालक की जिह्वा कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करें।

वर्णो के उच्चारण में स्थान, प्रयत्न, ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत को ठीक–ठीक बोले। तुतलाना, हकलाना और अस्पष्ट उच्चारण दोष दूर हों। मधुर, गम्भीर, सुन्दरस्वर, मात्रा, अक्षर, वाक्य, संहिता अवसान सभी साफ–साफ सुनाई दें। इसके लिए माता को आयुर्वेद और वर्णोच्चारण शिक्षा का ज्ञान होना चाहिए।

जब बोलने लगे तब सुन्दर वाणी और छोटे–बड़े मान्य पिता, माता, राजा, विद्वान् आदि से कैसे भाषण करना चाहिए इसे सिखाए। फिर स्वदेशी भाषा के अक्षर और संख्यांक लिखना सिखावे। इसके पश्चात् अन्य देशीय भाषाओं का अभ्यास करावे। भाषा ज्ञान और लिपि लेखनाभ्यास हो जाने पर व्यवहार और आचरण से सम्बन्धित मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य, वार्तादि अर्थ सहित कण्ठस्थ करावे। भयभीत करने वाले भूत–प्रेत, ज्योतिष, झाड़–फूंक आदि की यथार्थता से परिचित करा दे जिनसे सन्तान किसी धूर्त के बहकावे में न आवे। इतना कार्य माता सन्तान की पांच वर्ष तक की आयु में पूर्ण कर ले पश्चात् पिता तीन वर्ष तक ज्ञान पूर्वक लोक व्यवहार सिखावे। यहां तक माता–पिता का कर्तव्य बताया गया जिसका पालन किसी भी आर्य परिवार में निष्ठा पूर्वक नहीं किया जाता। इसके आगे आचार्य पर चर्चा करेंगे। इति

– ✍ वेदप्रिय शास्त्री

पतली होती तेल की धार देखो और महंगाई की रफ्तार देखो

— ✍ अखिलेश आर्येन्दु

रूस–यूक्रेन युद्ध का असर विश्व के ज्यादातर देशों में देखा जा रहा है। 20 मार्च को पेट्रोल के थोक भाव में पच्चीस रुपये महंगा हो गया है। इससे खुदरा दाम में किसी भी दिन बढ़ोत्तरी हो सकती है। भारत में रोजमर्रा की चीजों के दाम तेजी से बढ़ने शुरू हो गए हैं। आमआदमी जो कोरोना के चलते पिछले दो सालों से परेशान था, उसकी परेशानी बढ़ती जा रही है। केंद्र और राज्य सरकारें आम आदमी की समस्याओं को लेकर संजीदा दिखती तो है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और है। गौरतलब है पिछले बीस सालों में भारत में जहां करोड़पतियों की संख्या बढ़ी है, वहीं पर गरीबों की तादाद में भी बढ़ोत्तरी हुई है। रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के कारण पिछले पन्द्रह दिनों में पेट्रोलियम पदार्थों के दाम में बढ़ोत्तरी लगातार जारी है। ऐसे में महंगाई का बढ़ना लाज़मी है। लेकिन भारत में महंगाई जिस तरह से बढ़ रही है, उसके तमाम वजहें भले हों, लेकिन खास वजह पेट्रोलियम उत्पादों का महंगा होना माना जा रहा है। गौरतलब है 2008 के बाद पिछले कुछ महीनों में पेट्रोलियम उत्पादों के दाम में सबसे ज्यादा उछाल आया है। लेकिन रूसी आक्रमण के बाद वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम में जो उछाल आया है, वह कई मायने में भारतीय अर्थव्यवस्था पर असर डालेगा ही। गौरतलब है अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिकने वाले ब्रेंट क्रूड (कच्चे तेल) की कीमत 139 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई है। इसमें उछाल गिराव जारी है, जिससे आने वाले दिनों में महंगाई और भी बढ़ सकती है। पिछले पन्द्रह दिनों से, खासकर यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद तेल की आपूर्ति बंद होने की आशंकाओं के बीच ऊर्जा बाजार में अफरा–तफरी का माहौल हो गया है। वैश्विक स्तर पर संसेक्स में गिरावट जारी है। इससे बाजार में अफरा–तफरी का माहौल देखा जा रहा है। विकसित और विकासशील देशों में लोगों में डर का माहौल बन गया है। दुनिया में कोरोना काल में पिछले दो सालों से जिस डर ने लोगों को दहशत में जीने के लिए मजबूर किया, वह खत्म नहीं हुआ था कि रूस के यूक्रेन आक्रमण के बाद 'परमाणु–युद्ध' की आशंका के चलते दहशत का माहौल पसर गया है। गौरतलब है दुनिया को कई तरह की समस्याओं और संकटों का सामना करना पड़ रहा है। भारत में कई राज्यों में पेट्रोलियम उत्पाद महंगे होने की वजह से बिजली की अधिक खपत की वजह से लोगों को बढ़े बिजली बिल से रूबरू होना पड़ रहा है। यदि कुछ दिनों में रूस–यूक्रेन युद्ध खत्म नहीं हुआ तो, तेल के साथ–साथ गैस के दाम में भी बढ़ोत्तरी हो सकती है जो आम आदमी की जेब ढ़ीली करने की वजह बनेगी।

विश्व की अर्थ व्यावस्था से रूस कई तरह से जुड़ा हुआ है। इसलिए युद्ध का असर कुछ न कुछ हर देश पर पड़ना लाज़मी है। रूस का यूक्रेन पर आक्रमण से होने वाले आर्थिक असर दो तरह से दुनिया पर पड़ते दिखाई पड़ रहे हैं। पहला, प्रत्यक्ष रूस से–जिसका बड़ा हिस्सा तेल की ऊंची कीमतों से उपजता है। मौजूदा दौर में रूस दुनिया का सबसे बड़ा तेल उत्पादक और निर्यातक(अमेरिका व सऊदी अरब के बाद) देश है। जो 10 फीसद वैश्विक मांग की पूर्ति करता है। रूस के आक्रमण के बाद शुरूआती दिनों में ब्रेंट क्रूड की कीमत 100 डॉलर (7,580 रुपये) के पार चली गई थी। यदि युद्ध लगातार चलता रहा तो यह 125 डॉलर के पार जा सकता है। जिसका सीधा असर भारत पर पड़ना तय है। भारतीय अर्थशास्त्रियों के मुताबिक आने वाले दिनों में भारत में तेल, गैस और दूसरी रूस–यूक्रेन से आयातित उत्पादों के साथ भारतीय उत्पादों के दाम भी बढ़ सकते हैं।

भारत का रूस से सामरिक सम्बंध ही नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक, सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक सम्बंध भी बहुत पुराने हैं। रूस से भारत दोतरफा व्यापार करता है जो अरबों डालर का है। आंकड़े के अनुसार रूस से भारत ईधन के रूप में 2 अरब डालर का कच्चा तेल, 82.6 करोड़ डालर का खनिज तेल, 26.8 करोड़ डालर के कृषि उत्पाद, 95.8 करोड़ डॉलर का कोयल के अलावा मशीनरी और मैकेनिकल उपकरण, पर्ल, इलेक्ट्रिक मशीनरी और उपकरण, ब्यॉयलर, न्यूक्लियर, तरह–तरह के नग आयात करता है। वहीं पर 40.7 करोड़ डालर के इलेक्ट्रिकल मशीनरी उपकरण, 22.6 करोड़ डॉलर के न्यूक्लियर रियक्टर के पूर्जे, 18.5 करोड़ डॉलर के आर्गेनिक केमिकल और 10.8 करोड़ डालर के लोहा और इस्पात का निर्यात पिछले वर्ष किया।

आंकड़े से अनुमान लगाया जा सकता है कि युद्ध की हालात लगातार बने रहने से दोनों देशों को कितना नुकसान उठाना पड़ सकता है। रूस के अलावा भारत यूक्रेन से भी दो तरफा व्यापार करता है। यूक्रेन की हालात आने वाले दिनों में कैसे होंगे, यह बताने की जरूरत नहीं है। भारत में तेल की कीमतें आसमान छू रही हैं। रूसी आक्रमण के बाद अभी भले ही तेल की धार उतनी

पतली न हुई हो, लेकिन पतली होना तय है। गौरतलब है भारत अपनी जरूरतों का 80 फीसद तेल आयात करता है। जिसमें रूस का हिस्सा 2 अरब डालर से ज्यादा का है। पिछले वित्तवर्ष 2020–21 में भारत ने 94.3 अरब डालर (7.1 लाख कराड़ रुपये) का 17.59 करोड़ टन कच्चा तेल का आयात किया था। आयात–निर्यात पर असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर तात्कालिक पड़ेगा या दूरगामी इसका असर होगा, यह तो आने वाला वक्त बताएगा, लेकिन जिस दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था गुजर रही है, वह लम्बे समय तक टिकाऊ बनी रहे, कह पाना मुश्किल है।

जहां तक भारत में महंगाई का सवाल है, वह आने वाले दिनों में कम होने की हालात में नहीं है। यह इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि जनवरी 2022 में भारत की खुदरा महगाई अपने सात महीने के सबसे ऊंचे स्तर 6.01 फीसद पर थी और महंगाई की सीमा के आरबीआई के लक्ष्य से ऊपर थी, जो उछल कर 14 महीनों के सबसे ऊंचे स्तर 5.43 फीसद पर पहुंच गई थी। शेयर मार्केट तेजी से लुढ़के थे। लगातार महंगाई का बने रहने से आमआदमी को तमाम तरह की कठिनाइयों से दो–चार होना पड़ रहा है। खेती–किसानी, व्यापार, यातायात और ढुलाई जैसे तमाम क्षेत्रों की हालात कोरोना के चलते जो खराब हुई थी, वह रूस–यूक्रेन युद्ध के बाद अत्यंत दयनीय हालात में पहुंचती जा रही है। सवाल यह है, क्या आयात–निर्यात पर पड़ने वाले असर से भारतीय अर्थव्यवस्था पर उतना असर नहीं पड़ेगा जितना कि माना जा रहा था? सवाल यह भी है कि भारतीय पेट्रोलियम कम्पनियां आयातित महंगे तेलों से होने वाले नुकसान को झेल पांएगी या तेल के दाम बढ़ाकर अपना घाटा पूरा करेंगी? दूसरी बात, भारत अपने लगभग सारे फॉस्फैटिक उर्वरक आयात करता है, लिहाजा इस पर असर पड़ना लाजामी है। केंद्र सरकार यूरिया, फॉस्फोरस और पोटाश आधारित उर्वरकों पर सब्सिडी देता है और 2022–23 के बजट में इस मद में 1 लाख करोड़ रुपये रखे गए हैं। युद्ध के वक्त हालात किस तरह से बदलेंगे, कहना मुश्किल होता है, लेकिन इतना तो तय है कि भारत जो निर्यात रूस को करता है, उस पर, और यूक्रेन को जो निर्यात करता है, उस पर, असर पड़ना लाजमी है। ऐसे में भारत पर हर क्षेत्र में तात्कालिक असर तो पड़ेगा ही, दूरगामी असर से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

जानकारों के मुताबिक पांच राज्यों में हो रहे चुनाव की वजह से भारत में तेल के दाम नहीं बढ़ाए गए हैं। तेल की पतली धार की वजह वैश्विक ब्रैड्स यूक्रेन के संकट की वजह से रूस से सम्बंध तोड़ रहे हैं। लेकिन रूस अभी भी युद्ध विराम करने के मूड में नहीं दिखता। गौरतलब है भारत जल्द से जल्द युद्ध विराम चाहता है। यह भारत के ही हित में नहीं, बल्कि रूस–यूक्रेन और दुनिया के भी हित में है। लेकिन जिस तरह से रूस यूक्रेन को तहस–नहस करता आगे बढ़ रहा है, उससे नहीं लगता कि युद्ध जल्द ही समाप्त हो जाएगा और विश्व एक और महाविनाश से बच जाएगा। फिर भी आशा की जानी चाहिए की प्रधानमंत्री मोदी की पहल से कुछ सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।******

महर्षि दयानन्द द्वारा यजुर्वेद हिन्दी भाष्य का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद

प्रथम बार महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद आचार्य सतीश आर्य के द्वारा किया जा रहा है। यजुर्वेद का अंग्रेजी अनुवाद लगभग पूरा हो गया है, अभी संशोधन का कार्य प्रगति पर है। आचार्य सतीश जी ऐसे वेदज्ञ और अनुवादक हैं जिन्होंने अपने बल पर वैदिक वांग्मय के उत्थान में अनेक कार्य किए हैं। ज्ञातव्य है विश्व में वेद का अंग्रेजी अनुवाद मैक्स मूलर आदि का पढ़ाया जाता है। आचार्य सतीश आर्य ने महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद किया है। ज्ञातव्य है अभी तक ऐसा कार्य किसी ने नहीं किया था। अंग्रेजी अनुवाद के इस कार्य से विश्व में महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य को समझने का विद्त जनों को अवसर मिलेगा। जो भी विद्वान् आर्य जन महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य के अंग्रेजी अनुवाद पढ़ना –पढ़ाना चाहते हैं वे आचार्य सतीश आर्य के अंग्रेजी अनुवाद का अवलोकल एक बार अवश्य करें। आचार्य सतीश जी वेबसाइट के माध्यम से अंग्रेजी संस्कृत और हिंदी भाषा में वैदिक वांग्मय को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। आइए, हम सभी इनके कार्य का अवलोकन करें और इन्हें प्रोत्साहित करें।

FOLLOW SATYARTH-PRAKASH (INTRO-4)

– ✍ Dr. Roop Chandra 'Deepak'
Lucknow (U.P.)
Mob. 9839181690

The Satyarth-Prakash (Introduction) speaks:- ''यद्यपि आजकाल बहुत–से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैंय वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त, अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक–दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्त्तें–वर्त्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवेय क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।''

The Vedic Dharma is a constitution of all good principles and conducts. If you call this a self-appreciation, let us keep it aside and discuss some important issues, as enunciated by Islam, Christianity, Jainism, Buddhism, Sikhism and Hinduism. Hinduism has its roots in Vedic Dharma; but during last 25 centuries the Puranas, idol-worship, theory of incarnation and some other doctrines have changed it into a different path of life.

God is one and formless, Brahmcharya is righteous, Violence is unrighteous; all these principles belong to Vedic Dharma. But let us consider them belonging to Islam, Hinduism and Jainism respectively, so as to make a comparative study of the above principles.

Islam is the second largest religion of the world. It says God is one and formless. All the Muslims worship one God. Their system of worship is peculiar but they worship the formless Supreme Being. Christianity is the largest religion of the world. It says God is one, but also accepts equal or unequal Godship in all the three—God, Mother and Son. The Christians worship Christ and the Cross. This does not prove that Christianity worships one and formless God.

Jainism does not believe in God. The Jains do worship, and they worship twenty four Tirthankars. Buddhism is the fourth largest religion of the world. It does not believe in God, too. The Buddhists worship Buddha and the Bodhisattvas. Sikhism says that (Ek Omkar) God is one and formless. But the Sikhs regard Guru Nanak as supreme, and worship their Holy Book, addressing it as Guru Granth Saheb. It cannot be called the worship of one and

formless God.

Hinduism believes in both One and several Gods, and the Hindus worship both formless and formed God. They feel that Rama is God, Krishna is God, Brahma is God, Vishnu is God, Shiv is God, and they all are One. This theory is far from convincing, as it has doubts within doubts. Hinduism is the third largest religion of the world. The Hindus orally believe in the Vedas, but socially endorse several mutually opposed theories. Thus keeping all religions in mind, only one conclusion can be drawn. God being the master of the universe, is essentially one, and being omnipresent, essentially formless.

What about Brahmcharya? Islam does mot seem to have any regard for brahmcharya. Its armies and activists have always made sexual asaults. The world is not in a position to trust them on gender matters. What to talk in detail, brahmcharya is not a point of principle there.

Christianity is not so infamous for sexual assaults, but more so for adultery. Its members arrange marriage after marriage and divorce after divorce. The religious authorities follow the rule of celibacy, but it has nothing to do with brahmcharya. Clothing in public is also questionable.

Jainism has brahmcharya as an important principle of conduct. Most of its preachers and acharyas follow the strict rule of brahmcharya. The digambara Jains are most famous for austerity, which includes strict brahmcharya as well. Buddhism also has a high respect for brahmcharya. The Buddhist preachers and samnyasins also follow the strict rule of brahmcharya.

The Hindu way of life divides the human life span into four stages. Its second stage is for the family life, and the first, third and fourth stages are for brahmcharya. The family life also has a rule of ‘one life one couple’. Thus the Indian religions follow the rule of brahmcharya and ‘Matrivat pardareshu’, i.e., to regard the other women as one’s mothers.

With a view to making a pure human life and a society of gender belief, it is worth concluding that brahmcharya should be observed to the best of one’s capability. Brahmcharya is a great virtue, righteous, life-making and blissful.

Violence and non-violence are also the points to be considered for an important world order. So long as Islam is

concerned, its literal meaning is 'the way to peace'; but it has proved itself averse. It has fought wars after wars for nothing except itself. Its workers have looted temples, murdered men and killed women countlessly. They are planning terrorism through out the world. They are fighting with others; they are fighting with themselves. Non-violence does not appear to be a virtue for them.

Christianity has individuals observing non-violence, but as a community it has different history filled with battles and violence. As compared to India, Europe has very smaller countries, proving their violent attitude. The two World Wars had been caused by none others. Even the third World War is at their door being caused by themselves. They do not appear to be desirous of a non-violent life.

Jainism preaches for a non-violent life. Buddhism also has non-violence as one of its basic principles. Sikhism was primarily founded for fight and sacrifice. But normally it is a peace-loving or non-violent community. Hinduism also follow a non-violent system of life. Let us thus conclude that in India non-violence is a basic virtue.

By making comparisons between several communities or philosophies on three issues, we have come to the following conclusions:-

(1) God is one and formless;
(2) Brahmcharya is righteous;
(3) Violence is unrighteous.

In the same way, we can compare on other issues to draw further conclusions.

आर्ष क्रान्ति के सुधी पाठकों से

समाज सुधार, संस्कृति उन्नयन और धर्म जिज्ञासा क्षेत्र की अनेक पत्रिकाएं सोशल मीडिया पर आपने देखी और पढ़ी होगी । आर्ष क्रांति पत्रिका का तेवर और स्वरूप कैसा है इसे जानने की जिज्ञासा आपके मन में पैदा होती है, तो यह समझना चाहिए आप एक विचारवान और जिज्ञासु किस्म के बुद्धिमान व्यक्ति हैं । हमें आप जैसे क्रांतिकारी और प्रगति गामी विचारवान व्यक्ति का साथ चाहिए। फिर देर किस बात की । नीचे लिंक पर जाइए और फार्म भर कर हमें भेज दीजिए। अब आप जुड़ गए हैं ऐसी संस्था और पत्रिका से जो एक आदर्श समाज, उन्नतशील संस्कृति और मानव मूल्यों के धर्म की स्थापना के लिए कृतसंकल्प है । आप एक शुभ संकल्पवान व्यक्ति हैं और यह पत्रिका भी शुभ संकल्पों को मूर्त रूप देना चाहती है, एक आदर्श समाज निर्माण में हमारी संस्था और पत्रिका से जुड़कर आप अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं । आपका हमें इंतजार रहेगा।

इस लिंक पर क्लिक करके यह फार्म अवश्य भरें

http://bit.ly/aarshkranti

नोट – फॉर्म को भरने के लिए अपने मोबाइल / कम्प्यूटर में इन्टरनेट अवश्य चालू रखे

कर्तव्यबोध और यज्ञबोध कराता है यज्ञोपवीत संस्कार

– ✍ डॉ. विक्रम कुमार विवेकी

वैदिक धर्म और संस्कृति में संस्कार मानव निर्माण के आधार बताए गए हैं। यही कारण है गर्भधारण से लेकर मृत्युपर्यन्त संस्कारों की एक वृहद श्रृखला है। प्रत्येक संस्कार का अपना विशेष महत्त्व है। ये संस्कार ही हैं जो व्यक्ति को मानव जीवन के निर्माण, उसे श्रेष्ठता प्रदान करने, शिक्षा की ओर उन्मुख करने, परिवार, समाज, धर्म, संस्कृति, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति कर्तव्यों का बोध कराते हैं। 'विश्व एक परिवार है' का महान् विचार संस्कारों के माध्यम से ही आगे बढ़ते हैं। संस्कार विहीन व्यक्ति एक जंगल की तरह होता है और संस्कार युक्त व्यक्ति एक सुन्दर वाटिका की तरह। जैसे कीचड़ में पड़े स्वर्ण का संस्कार कर उससे आभूषण बनाया जाता है, वही कार्य संस्कार के माध्यम से किया जाता है।

यज्ञोपवीत में तीन धागे होते हैं। इसे त्रिसूत्र भी कहते हैं। ये तीन सूत्र माता–पिता, आचार्य और ऋषि या देव ऋण का याद दिलाते हैं। ये तीन ऋण हर इंसान के ऊपर तब तक होते हैं जब तक वह उपरोक्त श्रद्धायुक्त व्यक्तियों के प्रति अपने सारे कर्तव्य पूरे नहीं कर लेता है। वैदिक धर्म के सोलह संस्कारों में यज्ञोपवीत संस्कार भी एक अति महत्त्वपूर्ण संस्कार है। यज्ञोपवीत पहनने वाले व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, शैक्षिक, राजनैतिक और अन्य सभी तरह के दायित्वों का वह ईमानदारी से और कर्तव्यनिष्ठा से पालन करेगा। यज्ञोपवीत धारण करते वक्त संकल्प भी इन्हीं दायित्वों को पूरा करने के लिए कराया जाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्णों को वैदिक धर्म में यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार है। यज्ञोपवीत को उपनयन भी कहा जाता है। उपनयन का मतलब होता है 'प्राप्त करना' और 'पास ले जाना' है। यानी जो अभी तब न प्राप्त कर सका हो वह उपनयन धारण करके प्राप्त किया जा सकता है, और जिसके पास 'हम न जा सकते हों' उसके पास आंख के सहारे चले जाते हैं। उपनयन शब्द में 'नयन' शब्द भी है। इसका भी मायने दूर की वस्तुओं को प्राप्त करना। जैसे आंख से हम सारे भौतिक संसार का दर्शन करते हैं वैसे ही उपनयन धारण करने के बाद व्यक्ति अपने सारे दायित्वों को पूरा करने के लिए 'मान्य' बना दिया जाता है। प्रस्तुत लेख यज्ञोपवीत संस्कार की महत्ता और लाभ के सम्बंध में है। डॉ. विक्रम कुमार विवेकी जी द्वारा लिखित यह लेख जिज्ञासु पाठकों की यज्ञोपवीत सम्बंधी जिज्ञासा को शांत करेगा, ऐसी आशा करता हूं।

– सम्पादक

उपनयन का अर्थ है–समीप ले जाना। शिक्षार्थी की शिक्षा के लिए शिक्षक के पास ले जाना ही 'उपनयन' कहलाता है। शिक्षा–विधि, शिक्षा–लक्ष्य, शिक्षा–समय, शिक्षा–अवधि आदि समस्त विषयों का विवरण इस संस्कार के मन्त्रों व विधि–विधानों में सन्निहित है। माता–पिता पुत्र व पुत्री को आचार्य व आचार्या के पास गुरुकुल में ले जाकर उन्हें सौंप देते हैं। वे वहां रहकर प्रतिज्ञा करते हैं–ब्रह्मचर्यमागाम्, ब्रह्मचार्यसानि। मैं ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करता–करती हूं। ब्रह्म शब्द के तीन अर्थ होते हैं–ज्ञान, ईश्वर–प्राप्ति व वीर्य या शुक्र। ज्ञान–प्राप्ति के लिए संघर्ष रत रहना, ईश्वर–प्राप्ति का सत्प्रयास करना व छात्र–जीवन में

वीर्य व शुक्र क्षरण को रोकने के लिए कठोर साधना व संयम का जीवन बिताना ब्रह्मचर्य है। इस संसकार का भी मूल सन्देश वैदिक ऋचा में प्रतिपादित है–
आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं
कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति तंजातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।।

(अथर्व 11/5/3)

प्रायः सभी गृह्यसूत्रकार इस संस्कार का प्रतिपादन करते हुए ब्रह्मचारी छात्र को यज्ञोपवीत, मेखला, कौपीन व दण्ड धारण करने का निर्देश देते हैं। इन सब का गहन तात्पर्य भी है। यज्ञोपवीत पहनने का अर्थ है–नैतिकता एवं मानवता के अनिवार्य कर्तव्यों को अपने कन्धों पर लेना। यज्ञोपवीत के तीन, छह या नौ धागों में जीवन विकास का जो सारा सार समाविष्ट करने का प्रयास हमारे प्राचीन आर्यों व आचार्यों ने किया है उसे, इन धागों को कन्धों पर, हृदय पर, कलेजे पर, पीठ पर प्रतिष्ठापित करते हुए या हाथ से स्पर्श करते हुए इन में सन्निहित शिक्षाओं को स्मरण करना व उन्हें जीवन में अमल करना ही यज्ञोपवीत पहनने का लक्ष्य है, अन्यथा यह व्यर्थ है। मनु ने लिखा है–न लिग्ड. धर्मकारणम्। शरीर के बाह्य प्रतीक चिन्ह धर्म के धारक तत्त्व नहीं हैं। यज्ञोपवीत शब्द का अर्थ ही है–यज्ञ के समीप बैठने का अधिकारी होना। यह वह संस्कार है जो हमें यज्ञ के समीप विशेष तैयारी के साथ पहुंचा देता है। यज्ञ यानी परोपकार आदि विशिष्टि कर्मों के प्रति हमें आग्रही व लालायित बनाता है। यज्ञोपवीत को नकारने का मतलब है आदर्श जीवन को जीने की प्रतिज्ञा से इन्कार करना। जन्मना तो हमस ब पशु या शूद्र होते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार ही हमें द्विज बनाता है। इस के सन्देश को आचार्य कुल में ग्रहण करके ही हम पुनः ब्राह्मण, क्षत्रिय यावैश्य बनकर समाज–सेवा में अवतरित होते हैं।

यज्ञोपवीत के साथ छात्र को मेखला व कौपीन धारण कराने का प्रयोजन है–उसे ब्रह्मचर्य पालन की एवं प्रत्येक कार्य में जागरूक, सतर्क, कटिबद्ध व प्रत्येक कर्तव्य में निरालस्य रहने की प्रेरणा देना। कमर में मेखला बांधाने का वही लाभ है, जो पुलिस या सैनिक कमर में पेटी बांधकर प्राप्त करते हैं। प्रमाद, लापरवाही, ढीलेपन, दीर्धासूत्रता व अन्यमनस्कता को मेखला धारण के द्वारा दूर किया जाता है तथा कौपीन=लंगोट बांधकर ब्रह्मचर्य की ऊर्जा को शरीर में ही समेटकर रखा जाता है। जो इन चिन्हों का उपहास करके इस कच्ची उम्र में अपने जीवन–रस के साथ खिलवाड़ करना आरम्भ कर देते हैं, वे आत्महत्या की ओर रह जाता है। छात्र के लिए दण्डधारण का भी विधान है जो उत्तरदायित्व का प्रतीक है तथा उसके दैनिक उपयोग में आत्मरक्षा का साधन भी बनता है। इस विषय में वैदिक ऋचा द्रष्टव्य है–
यज्ञोपवीत समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्त्ति।।

यज्ञोपवीत, मेखला, कौपीन व दण्ड का धारण जीवन के तप हैं जो ब्रह्मचारी को ब्रह्मचारी को ब्रह्मचर्य का पालन सावधानी व दृढ़ता पूर्वक करने का सन्देश देते हैं। क्योंकि तप, संयम और श्रम ही वे नियमित जीवनचर्या हैं जो विद्यार्थी को महान् बनाकर समाज या राष्ट्रयज्ञ व धर्मयज्ञ का अधिकारी बनाते हैं।
इति

******

महाकवि नाथूराम शर्मा'शकंर': युगधर्मी साहित्यकार व समाजसुधारक

— ✍ अखिलेश कुमार

हिन्दी साहित्य के विशाल कालखण्ड में ऐसे महान् युगधर्मी, देशभक्त और समाज सुधारक साहित्यकार हुये हैं जिन्होंने अपनी लेखनी और समाजसेवा के कार्यों से साहित्य, समाज और देश की अतिशय सेवा की। ऐसे ही कालजयी साहित्यकार हुये हैं पं. नाथूराम शर्मा 'शंकर'। विशाल साहित्यिक अवदान के लिए उन्हें 'महाकवि' कहकर पुकारा गया। शंकरजी की कविताओं में तत्कालीन ब्रिटिश शासन से छूटकारा पाने की टीस और उपदेश तथा संदेश पाया जाता है वहीं पर बच्चों, बड़ों, बूढ़ों और महिलाओं को प्रेरणा देते हुये भी दिखाई देते हैं। इनकी कविताओं में वह विविधता, लालित्य, छन्द, अंलकार और बिम्बों का अनुपम प्रयोग मिलता है जिसे पढ़कर पाठक उसी में खो जाता है। लेकिन बिडम्बना यह रही है कि हिंदी साहित्य की धारा में उन्हें वह स्थान व महत्त्व नहीं दिया गया जिसके वे हकदार हैं। आज भी भारतेंदु और द्विवेदी युग की चर्चा होती है लेकिन भारतेंदु और द्विवेदी युग के कड़ी माने जाने वाले इस महान् कलमकार की चर्चा शायद ही कभी होती हो। शंकरजी के महान् अवदान की चर्चा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से लेकर तत्कालीन हिंदी के महान् आचार्यों ने जिस प्रकार से की, उससे यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि हिंदी साहित्य के इतिहास में उनको महत्त्व न देने का कोई कारण दिखाई नहीं देता है। शंकरजी को 'महाकवि' मानने वाले एक-दो नहीं बल्कि अनेक साहित्यकार थे। **जन्म :** महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' का जन्म चैत्र शुक्ल ५, संवत् १९१६ वि. को हरदुआगंज, अलीगढ़(उत्तर प्रदेश) में हुआ। कहा जाता है इनके जन्म के पूर्व इनके कई भाई-बहन अकाल मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। अंधविश्वास के कारण परिवार वालों ने सोचा इस बालक की जीवन-रक्षा के लिए नाक छिदवा दी जाय, तो शायद बच जाये। अतः इनकी नाक छिदवा दी गई। इस कारण से बचपन में इन्हें नत्था, नत्थू और नथुआ जैसे देहाती नामों से पुकारा जाता था। आगे चलकर इनका नाम नत्थूराम पड़ गया। बाद में जब कविता करने लगे तो इन्होंने अपना उपनाम 'शंकर' रख लिया। परिवार की स्थिति अच्छी नहीं थी। किसी तरह हिंदी और उर्दू में मीडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पूर्व उन्होंने अपने नाना पं. युगलकिशोर से फिर कानपुर के पं. देवदत्त शास्त्री को अपना गुरु स्वीकार करके संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त की। शिक्षा के प्रति गहरी अभिरुचि के कारण ही इन्होंने अपने बल पर वेद, आयुर्वेद, पुराण, इतिहास, भूगोल, दर्शन और हिंदी व उर्द, संस्कृत के विषय का विधिवत् ज्ञान प्राप्त किया। शंकरजी की रुचि बचपन से ही कविता सृजन में थी। बात-बात में कविता बना देते थे। यहाँ तक कि पाठ्यक्रम में सम्मिलित अपने विषय को भी कविता में लिखकर याद किया करते थे। कहा जाता है कि सहपाठी और बालसखा रामजी को सावधान करने के लिए एक तुकबंदी लिखी । यही दोहा इनकी प्रथम रचना है।

अरे यार सुन रामजी, लोभी तेरी जात/तनक-तनक से दूध पै मा को पकरे हाथ।

बचपन से ही काव्य की अद्भुत क्षमता के कारण इन्हें बचपन में ही 'आशुकवि'' की पदवी प्राप्त हो गई थी। कविताओं में छंदों, अलंकारों, समासों और बिम्बों के अद्भुत प्रयोग के कारण और सहज, सरल लालित्यपूर्ण ढंग से लिखने के कारण उस समय की सबसे स्थापित पत्रिकाओं सरस्वती, ब्राह्मण, और परोपकारी में इनकी कवितायें बहुतायत से प्रकाशित होती थीं। इनमें काव्य की महान् प्रतिभा के कारण ही इनके काव्य संग्रह 'अनुराग रत्न' की भूमिका में नरदेव शास्त्री

ने इन्हें जन्मसिद्ध प्रतिभाशाली कवि कहा है। शंकरजी ने १३ वर्ष की आयु में ही कविता करना प्रारम्भ कर दिया था। स्वाध्याय की गहरी रुचि के कारण कई भाषाओं और विषयों पर अधिकार कर लिया था। 'सरस्वती' पत्रिका में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें लिखने के लिए आग्रह किया। यहाँ तक कि सरस्वती में प्रकाशित होने वाले चित्रों पर आचार्य द्विवेदी शंकरजी से ही कवितायें लिखवाते थे। शंकरजी की 'वसंत्सेना विलास' और 'मोहिनी' ऐसी ही कवितायें हैं । शंकरजी बचपन से ही मुशायरों और साहित्य-सम्मेलनों में भाग लिया करते थे। लेकिन बालक समझकर इन्हें कविता पढ़ने का अवसर कम ही मिलता था। एक बार की बात है। शंकरजी ने मिन्नत-खुशामद करके कविता पाठ के लिए थोड़ा समय ले लिया और ये पंक्तियां पढ़ीं। –

ज़मन ग़रीबों शको का कलजुल/ इधर हमारे उधर तुम्हारे।
तुल्फे तकीज़ा खिजरे वतन्नुल/ इधर हमारे उधर तुम्हारे।

इन पंक्तियों का पढ़ना था कि मुशायरे में भाग लेने वाले अनेक शायर कहने लगे-लड़के तू किससे लिखवा कर लाया है?इस पर शंकरजी हँसते हुए बोले- **शायरे अशआर मुहमिल/ उर्फ़ नाथूराम नाम। शेखसादी भी न समझे/जिस सखुनवर का कलाम।**

यह काव्य में समस्यापूर्ति का युग था। हिंदी साहित्य की सभी पत्रिकाओं में समस्यापूर्ति सम्मिलित की जाती थीं। कवि शंकर समस्यापूर्ति में अत्यंत प्रवीण थे। बात-बात में कुछ ही मिनट में समस्यापूर्ति कर दिया करते थे। एक बार महान् साहित्यकार आ. पद्मसिंह शर्मा ने इनको 'चांदनी शरद की' समस्यापूर्ति के लिए अनुरोध किया। कुछ ही मिनट में इन्होंने सुंदर समस्यापूर्ति लिखकर दे दिया-

'देखिए इमारतें मज़ार दुनिया के सारे/ रोज़े ने कहो तो शान किसकी न रद की।
हीरा, पुखराज, मातियों की दर दूर कर/ शंकर के शैल की भी श्वेतिमा ज़रद की।।
शौकत दिखा दी जमुना के तीर शाहजहाँ/ आगरे ने आबरू इरम की गरद की।
धन्य मुमताज बेगमों की सरताज/तेरे नूर की नुमायश है चाँदनी शरद् की।'

व्यक्तित्व : महाकवि शंकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे जहाँ वेद-वेदांग के अधिकारी विद्वान थे वहीं पर दार्शन, साहित्य, समाज, सांस्कृति और धर्म जैसे अनेक विषयों पर अधिकार रखते थे। ये पंक्तियां उनके इस बहुआयामी व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करती हैं-

वेद और उपवेद पढ़ा सकता हूँ पूरे।
अड्ग विधायक भेद, रहेंगे नहीं अधूरे।
तर्क-प्रवाह-तरंग, विचित्र दिखा दूँ सारे।
पौराणिक रसरड्ग प्रसड्ग सिखा दूँ सारे।।

इतना ही नहीं कम उम्र में ही शिल्प, रसायन, विज्ञान, विमान और यंत्र-विद्या में भी दक्षता प्राप्त कर ली थी। वे कहते हैं-

शिल्प, रसायन सार कहो जिसको सिखला दूँ।
अभिनव आविष्कार, अनोखे कर दिखला दूँ।।
भूमियान, जलयान, वितान बना सकता हूँ।
यंत्र सजीव समान, अजीव बना सकता हूँ।।

शंकरजी योग के क्षेत्र में भी प्रवीणता प्राप्त कर लिये थे। उनकी यह रचना इसी बात को अभिव्यक्ति कर रही है।

जन लिया हठ योग, अखण्ड-समाधि लगाना।
कर्मयोग फल भोग, अमड्गल भूत भगाना।।

विज्ञान में उनकी कितनी पैठ थी, 'पावस प्रमोद' की ये पंक्तियां इस बात की ओर संकेत करती हैं-

''ऊपर को जल सूख-सूखकर उड़ जाता है।
सरदी से सकुचाय, जलद पदवी पाता है।।
पिघलावे रवि-ताप धरातल पै गिरता है।
बार-बार इस भाँति सदा हिरता-फिरता है।।

कवि शंकर परोपकारी वृत्ति, करुणा, सहिष्णुता, विनम्रता और भाईचारे की भावना के तो वे साक्षात् प्रतिमूर्ति ही थे। वे जिस कार्य को करते बहुत परिश्रम और निष्ठा के साथ करते। अपनी

प्रतिभा के कारण ही वे जिलेदार जैसे पदों पर पहुँचे थे। लेकिन स्वाभिमानी होने के कारण उन्होंने इस पद को त्यागकर चिकित्सक का कार्य अपना लिया था। चिकित्सा के कार्य को भी अपनी कर्मभूमि में बहुत ही परिश्रम, मृदुता और विनम्रता के साथ करते थे। निर्धन रोगियों की हमेशा निःशुल्क चिकित्सा किया करते थे। किसी रोगी से वे औषधि के बदले पैसे की मांग नहीं करते थे। जिसने जो दिया उसी में संतोष कर लिया। अर्थात् उन्होंने चिकित्सा को व्यवसाय के रूप में कभी नहीं बल्कि समाजसेवा के रूप में अपनाया। उनके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये लेकिन कभी भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया। यहाँ तक कि जीवन के अन्तिम दिनों में, जब उनकी इकलौती पुत्री 'महाविद्या' और पौत्री 'शारदा' की मृत्यु हुई फिर चार पुत्रों में से दो पुत्रों की मृत्यु नौ महीने के अन्दर हो गई तब भी धैर्य धारण किये रहे। पत्नी की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी। फिर मानव का हृदय ऐसे वज्रपात को भला कब तक सहन करता रहता। इसके उपरान्त उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहा। कई महीनों तक चारपाई पर पड़े रहे। कहा जाता है, मृत्यु से पूर्व उन्हें अपनी मृत्यु का आभास हो गया था। इस बात को उन्होंने मृत्यु के पाँच माह पूर्व अपनी वर्ष गांठ मनाते हुये कहा था तथा अपने मित्रों को पत्रों में भी लिखा था।

आयु तिहत्तर हाय न भोगी/ वर्षगाँठ अब और न होगी।

जीवनभर संघर्ष करने वाले हिंदी के इस महान् योद्धा का वह अशुभ दिन आ गया जब हिंदी समाज को अलविदा कहकर भाद्रपद कृष्ण ५ सं. १९८९वि. तदनुसार २१ अगस्त १९३२ ई. को अपने स्व में समाहित हो गये। उनकी मृत्यु पर उनकी मातृसंस्था आर्य समाज, कर्मसंस्था हिंदी समाज और लोक संस्थाओं ने शोक मनाया।

महाकवि शंकर का कृतित्व : रचनाकार जिस युग में होता है उस युग का प्रभाव उस पर गहराई से तो पड़ता ही है। महाकवि शंकर पर भी तत्कालीन स्थितियों और परिस्थियों का प्रभाव गहरे तक पड़ा। भारतेन्दु और द्विवेदी युग के सेतु कहे जाने वाले कवि शंकर पर भारतेन्दु और द्विवेदी दोनों का प्रभाव इन पर दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में शंकरजी के कुछ रचनाओं का उल्लेख मिलता है। जिसमें से अधिक चर्चित अनुराग रत्न, गर्भरंडा रहस्य, शंकर सरोज तथा वायस विजय प्रमुख हैं। लेकिन अधिकांश हिंदी विद्वान उनकी समस्त कृतियों को ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं। शंकरजी की कृतियां न केवल तत्कालीन समाज का साक्षात्कार कराती हैं प्रत्युत वर्तमान सामाजिक समस्याओं से भी जुड़ी हैं। फिर भी हिंदी के महान् आचार्यो व विद्वानों के द्वारा उपेक्षा का व्यवहार सर्वथा अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है। लेकिन उनकी कृतियों की गवेषणा के उपरान्त डॉ. वीरेन्द्र ने 'शंकर सर्वस्व' की भूमिका में उनकी सभी कृतियों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण किया है जो इस प्रकार है-

बहारे चमन(सन् १८८१ई.)
हरिश्चंद (सन्१८८१ई.)
सुन्दरी-स्वप्न-प्रकाश(१८९०ई.)
चौक चांदनी(सन्१८९८ई.)
शंकर सरोज(१९०४ई.)
कलित कलेवर, भारत भट्ट भणंत, शंकर सतसई।

महाकवि शंकर की दृष्टि सभी विषय पर पारदर्शी और उद्देश्यपूर्ण थी। यही कारण है उनकी सभी रचनायें किसी न किसी उद्देश्य पर आधारित दिखाई देती हैं। लेकिन उनके लिए 'यश गौण वस्तु थी और अर्थ तो उससे भी गौण। उनके रचनाकर्म का उद्देश्य था-संसार में प्रच्छन्न अथवा प्रकट रूप में फैले हुये अशिव का नाश, मानव समाज का कल्याण तथा राष्ट्र के दुख-दैन्य व दारिद्र की समाप्ति। उनकी सभी रचनायें जहाँ पाठक को सुरस से अभिसिंचित करती हैं वहीं पर किसी विशेष उद्देश्य और भाव से जोड़ती भी हैं। कवि शंकर ने काव्य के अतिरिक्त नाटक, अनुवाद, निबंध भी लिखे।

महाकवि की रचनाओं में जहाँ विचारों, समस्याओं और वेदनाओं का प्रभावपूर्ण प्रवाह मिलता है वहीं पर जनरुचि के अनुरूप छंदों एवं

भाषाओं का प्रयोग किया गया है। कल्पनाओं की उड़ान भी कम नहीं है। शंकरजी द्वारा लिखे गये नाटकों में पौराणिकता और काल्पनिकता का समुचित वर्णन है। ग्रामीण कथानकों में जो सरलता एवं प्रगाढ़-प्रेम दिखाई देता है, वह भी अत्यंत मार्मिक है। विरहणी के वर्णन में प्रिय का न लौटना वेदनापूर्ण है। मधुमास तो उनके लिए अत्यंत दुखदाई है। -

'अरी मधुमास महा सुख मूल/कहे सब मोहि भये प्रतिकूल।
खिलें बन में बन में बनफूल / घने रत नायक शायक शूल।।

विरह वेदना किसी भी ऋतु में सुखदाई नहीं होती है यहां तक कि वर्षा ऋतु में भी नहीं। ये पंक्तियां- **उठे बदरा दुख दारुण देत, चढ़ी चपला चमके जिय लेत।** विरह का काल तो एक-एक पल बहुत दुखदाई होता है। महाकवि की अनेक कवितायें रीतिकालीन परंपरा पर आधारित हैं। इसमें मुख्यरूप से विप्रलंभ श्रृंगार के अन्तर्गत षड्-ऋतुओं एवं बारह महीनों में वियोगिनी नायिका की विरह-दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शंकरजी द्वारा सृजित 'बारहमासा' दो सखियों के उत्तर-प्रति-उत्तर के रूप में वर्णित है। प्रकृति उद्दीप्त-रूप में प्रस्तुत हुई है।

महाकवि शंकर ने बालसाहित्य का सृजन किया। चौक चांदनी नामक बाल काव्य-संग्रह में बच्चों से संबंधित जो रचनायें उन्होंने सृजित कीं वे सभी चौक चांदनी शैली और चौपाई छंद में लिखी गयी हैं। कविताओं में विद्यालयी शिक्षा-पद्धति के अनुसार सरल और मनोरंजन ढंग से बालकों में अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम-भाव अंकुरित करना था। इसके अतिरिक्त नैतिक शिक्षा, सुखकारी शिक्षा, वर्षा ऋतु का वर्णन, आचरण की शुद्धता जैसी अनेक विषयों पर कवितायें लिखीं। 'रामलीला', कृष्ण कीर्तन, 'कलयुगराज, मातृभाषा की दशा और भारत की दुर्दशा पर बहुत सुगढ़ बाल कवितायें लिखीं। 'रामरुपैया, भगवान राम की तुलना रुपये से करते हुये लिखा है- **भूखे मरे राम के प्यारे, याके प्रिय भोगें सुखसारे। रामहि चाहत मुनिव्रतधारी, याके चाहत सब नर-नारी।** रुपये का बढ़ते बोलबाला पर व्यंग्य लिखा तो अफीम और अन्य बुराइयों से बचाने के लिए भी कवितायें लिखीं।

बीती आधी निसि अंधियारी, घर में बाट निहारै नारी।
प्राणनाथ पुलिया में पाए, दौड़ दुहत्तड़ मार जगाए।
जब जोरू ने जूती मारी, तब टेसू ने आंख उघारी।।

पाखण्ड और व्यापारियों के गोरखधंधे पर व्यग्यांत्मक कविताये ंतो लिखीं ही संवत् १९५३-५४ के अकाल में बच्चों और शिशुओं की स्थिति का चित्रण भी सजीव ढंग से किया।

बीन-बीन कर दाने कच्चे, चाबत फिरें बिचारे बच्चे।
तन भूखे युवतिन के रूखें, पटके पेट पयोधर सूखे।
एक राख मुख में कुच मसके, एक अचेत गोद में सिसके।

समाज में बाल-विधवाओं की स्थिति इतनी विकट थी कि कोई भी देखकर रो देता था। सारा समाज इनकी इस विकट स्थिति का लाभ उठाता था। इससे उसमें दुख सहन की शक्ति समाप्त हो गई। अब तो इससे छुटकारा पाने के लिए केवल मृत्यु ही एक उपाय बचा था।

विधवा दुखियन की सुन टेर, कर दुख दूर दई दिन फेर।
भयो कठोर अरे करतार, हमको मार कि संकट टार।

सन् १९०४ में प्रकाशित 'शंकर सरोज' नामक पुस्तक में राष्ट्र-प्रेम और समाज सुधार की बात अत्यंत निभट्टकता व साहसिकता के साथ की गई है। कविता 'भूखा भारत' का दृश्य- **जो था नव खण्डों में नामी, द्वीय रहे जिसके अनुगामी। सो सारे देशों का स्वामी, अब औरों का दास है। देखो कैसा डरता है, भारत भूखा मरता है।**

महाकवि शंकर ने दर्शन, धर्म-कर्म आदि पर जो कवितायें लिखीं, वह भी दर्शन व धर्म-कर्म की श्रेष्ठ कविताओं में गिनी जाती हैं।

सुधार, धर्म-कर्म को, विसार दो अधर्म को,बढ़ाय बेल प्रीत को, कथा सुनीति-रीति को -सुना करो अनेक से।

शंकर की कविताओं में छन्दों का प्रयोग अत्यंत लालित्यपूर्ण और सुगढ़-रूप से किया गया है। इस छंद में शोणित-पीड़ित जर्जर भारत की वेदना की अभिव्यक्ति हुई है-

बल बिन कौन रखावे घर को, विद्या बँट गई इधर-उधर को।
संपत्ति फाँद गई सागर को, कोरा रंग निरास है,
हा, पेट नहीं भरता है, भारत भूखा मरता है।

महाकवि शंकर द्वारा सन् १९११ ई. में 'अनुराग रत्न' की रचना की गई। यह ग्रंथ पाँच भागों में विभाजित है। यह विविध विषयों पर रचित छंदों के कठोर बंधन से बद्ध नवीन एवं मौलिक काव्य संग्रह है। इस काव्य की प्रशंसा करते हुए महान् साहित्यकार पं. पद्मसिंह शर्मा ने लिखा था-''इसमें कवि ने 'सर्वथा नवीन रीति से अलौलिक और अनूठे भावों को भरा है, इसे नवोन्मेषशालिनी कवि-प्रतिभा का चतुरस्र विकास समझना चाहिए।''

कहा आता है 'अनुराग रत्न' एक अपूर्वरत्न है, जो हिंदी साहित्य में अपना जोड़ नहीं रखता है। इसमें अंलकारों की अधिकता, रस और भावों की बहुलता, विषय-वर्णन की विचित्रता, चमत्कार की चारुता आदि गुणों से भी 'अनुराग रत्न' देदीप्यमान है। यह अनूठी कविता-

आतप-ताप स्नेह रसों को, मेघ रूप कर देता है।
सार सुगंध सर्व द्रव्यों के, मारुत में भर देता है।।
होते हैं जलवायु शुद्ध यों बल वद्र्धक अनुकूल।
भानुदेव से सीखा हमने हवन कर्म सुखमूल।।

इस काल में शंकरजी ही ऐसे कवि हुए जिन्होंने छंद परंपरा को नई वैज्ञानिकता प्रदान की। छंद शास्त्र का सामान्य नियम है कि मात्रिक छंदों में मात्रा की गणना होती है, वहाँ वर्णों का बंधन नहीं होता है। कवि शंकर ने परंपरा से चली आ रही इस रीति को बदल कर अपने 'अनुराग रत्न' में वर्ण वृत्तों की भाँति मात्रिक छंदों में भी समानता रखी। अनेक कवियों में कवि शंकर की ही कवितायें पिंगल की कसौटी पर खरी उतरती हैं। अनुराग रत्न को पं. पद्मसिंह शर्मा ने 'आश्चर्य काव्य' कहकर इसकी प्रशंसा की है। इसमें जैसा छंदों का प्रयोग और दार्शनिक ज्ञान का प्रयोग किया गया है वह अद्भुत है। एक छंद ब्रह्मविवेकाष्टक का उदाहरण-

एक शुद्ध सत्ता में अनेक भाव भासते हैं।
भेद-भावना में भिन्नता का न प्रवेश है।
नानाकार द्रव्य, गुणधारी, मिल नाचते हैं।
अंतर दिखाने वाले देश का न लेश है।।

'रामलीला' नामक कविता में रामायण का सार निकालकर 'गागर में सागर' भरा है। -

सुरसरिता-तीर, नवीन, विरक्त पधारे।
पग धोय धनुक ने पार, तुरंत उतारे।
पहुँचे प्रयाग व्रतशील, स्वदेश दुलारे।
मुनि मंडल ने हित-प्रेम, पसार निहारे।
इस भाँति अतिथि को पूज सदय सत्कारो।
पढ़ राम-चरित्र पवित्र, मित्र उर धारो।।

कवि शंकर एक महान् सुधारवादी कवि थे। उन्होंने समाज में व्याप्त पाखण्ड, अंधविश्वास, कदाचार, क्रूरता, निर्धनता, असहायता और समाज के निम्न वर्ग की विधवाओं की दीनहीन दशा को संवेदना की खुली आँखों से देखा था। उनके कारुणिक दशाओं को देखकर उनका हृदय चित्कार उठा और जिसके फलस्वरूप उन्होंने १९१९ में 'गर्भरण्डा रहस्य' नामक काव्य ग्रंथ की रचना की थी। इसमें कन्या का गर्भ में विधवा हो जाना, जो विचित्र-सी बात लगती है, उसे कविता का विषय बनाया। ऐसी ही एक घटना का वर्णन कवि शंकर ने किया है। इसका कथानक लीला नाम की एक विवाहिता गर्भवती का है जो धूर्त ज्योतिषी की बातों में आकर गर्भ में पल रही संतान का विवाह अशुभ घटना मिटाने के लिए नवजात एवं मरणासन्न बालक से कर देती है। स्पष्ट बात है, विवाह के बाद बालक के मरते ही गर्भस्थ कन्या विधवा हो जाएगी। कन्या का नाम कमला रखा जाता है। एक हजार रुपये में सारा कर्मकाण्ड धूर्त पंडित और ज्योतिषी करने के लिए तैयार हो जाता है। अन्त में गर्भस्थ कन्या पैदा होती है जो बड़ी होकर माँ

की जिद के कारण वैधव्य का जीवन व्यतीत करती है। हरिद्वार के कुंभ में हैजे से माँ की मृत्यु हो जाती है। अकेली कमला भगवद् भजन करती हुई विधवाओं की सेवा में लग जाती है। कवि शंकरजी ने तत्कालीन विधवाओं की दुर्दशा का वर्णन अत्यंत हृदय विदारक है। पढ़कर आंखों में आंसू छलकना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

महाकवि शंकर ने संस्कृत वाड्.गमय से प्रेरणा ली और कुछ ग्रंथों में वर्णित कथाओं का कविता में लालित्यपूर्ण ढंग से अनुवाद किया। ऐसी ही इनकी एक रचना है वायस विजय जो १९१९ ई में सृजित की गई। शंकर की यह कृति पं. विष्णु शर्मा कृत संस्कृत नीति ग्रंथ-पंचतंत्र के तृतीय प्रकरण 'काकोलूकीय प्रकरण' का काव्यानुवाद है जिसे उन्होंने संक्षिप्त-रूप से वीर छंद में किया है । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से शंकरजी ने यह पद्यानुवाद किया था। इस प्रकरण में कौओं और उल्लुओं की लड़ाई का वर्णन है। इस प्रकरण में वायस(कौए) की विजय हुई। इस कारण इसे वायस विजय कहा गया। इस कथा में अनेक अंतर्कथाएँ पिरोयी हुई हैं। मूल कथा कौए और उल्लुओं की शत्रुता का है। इस कथा के माध्यम से प्रकरांतर से कवि ने भारतीयों की नीति तथा कूटनीति की शिक्षा देते हैं। इस पूरे काव्य में शत्रुओं का नाश कैसे किया जाए इस पर विचार तो किया ही गया है, साथ ही अन्य प्रकार की नीतियों पर भी चर्चा की गई है। कपोती के मुख से कवि शंकर नारी को पतिव्रता धर्म की शिक्षा देते हुए कहते हैं-

जो अबला करती है, अपने पति की सेवा में संकोच,
केवल भू पर भार भूत है, इस कुटिला का जीवन पोच।
जिस ललना ने जान लिया है, सर्वोपरि पातिव्रत धर्म।
उस अनघा से कभी न होंगे, कुलटा के-से घोर कुकर्म।

इसी प्रकार उनकी कविताओं में अंग्रेजी शासन की नीति-अनीति, शासन को चेतावनी और आम लोगों को नैतिक शिक्षा दी गई है। नैतिक शिक्षा का एक उदाहरण-**वैर फूट के पास न जाना, सब से रखना मेल-मिलाप/ पुण्यशील सुख से दिन कार्टे, पापी करते रहे विलाप।**

महाकवि शंकर की अन्य रचनाओं (ग्रंथों) में कलित कलेवर, भारत भट्ट भणंत और शंकर सतसई है। कलित कलेवर प्रकाशित और अप्राप्य है। इसमें बड़ी सुन्दरता से नख-शिख का वर्णन किया गया है। लेकिन अति श्रृंगारिका के कारण कवि ने इसे प्रकाशन योग्य न समझा। भारत भणंत भी अप्रकाशित है। यह व्यंग्य काव्य है। शंकर सतसई में कवि के छिटपुट दोहे सम्मिलित किए गए हैं। इन रचनाओं के अतिरिक्त शंकरजी ने बड़ी संख्या में 'समस्यापूर्ति' की जो तत्कालीन हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं-सरस्वती, ब्राह्मण, रसिक मित्र, आर्य मित्र और परोपकारी में प्रकाशित होती रहती थीं।******

पण्डित – जो सत असत को विवेक से जानने वाला, धर्मात्मा सत्यवादी, सत्य-प्रिय, विद्वान् और सबका हितकारी है, उसको "पण्डित" कहते हैं।

मूर्ख – जो अज्ञान, हठ, दुराग्रहादि दोष सहित है उसको "मूर्ख" कहते हैं।

ज्येष्ठ कनिष्ठ व्यवहार – जो बडे और छोटों से यथायोग्य परस्पर मान्य करना है; उसको "ज्येष्ठ कनिष्ठ व्यवहार" कहते हैं।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

मानवता के ज्योतिर्मय पथ के ज्योतिपुंज राष्ट्रवादी वेदज्ञ महर्षि दयानन्द

– ✍ अखिलेश आर्येन्दु

महर्षि दयानन्द का वेदों के सम्बन्ध में दृढ़ विश्वास था– वेद वह ज्ञान है जिसे पाने के लिए मानव का समस्त चिन्तन–मनन प्रयत्नशील है। ***यानी यस्मिन् विज्ञाते सर्वम् विज्ञातम्।*** जिसे जानने से सब कुछ जाना जाता है। श्री अरविन्द कहते हैं–''यह दिव्यवाणी है जो कम्पन्न करती हुई असीम में से निकलकर उस मनुष्य के अन्तःश्रवण में पहुंची जिसने पहले से ही अपने आपको 'अपौरुषेय' ज्ञान का पात्र बना रखा था।'' दरअसल, महर्षि दयानन्द ने वेदों के लिए पूर्वी और पश्चिमी देशों में फैली भ्रान्तियों, भ्रमों, संदेहों, उल्टी और गलत धारणाओं और मान्यताओं को ही नहीं तोड़ा बल्कि वेदों के जरिए ही उन्होंने यह साबित करके दिखा दिया था कि यदि दुनिया वेदों के बताए रास्ते, कार्य, विचार, मंत्र और व्यवहार को समझ व मान ले, तो दुनिया से हिंसा, नफरत, अन्याय, शोषण, क्रूरता, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, व्याभिचार और हर तरह के अन्धविश्वास और पाखण्ड दूर हो सकते हैं। यही वजह थी कि महर्षि दयानन्द से शास्त्रार्थ करने वाले और उनके पाखण्ड और अन्धविश्वास के खण्डन से चिढ़े लोग भी कहते थे, दयानन्द जो कहते हैं वह ही अंतिम सत्य है, भले ही स्वार्थ की वजह से लोग (हम) स्वीकार न करें।

महर्षि दयानन्द की नजरिया देश, समाज, संस्कृति, धर्म और भाषा के सम्बन्ध में राष्ट्रवादी था, वहीं पर आदर्श समाज की स्थापना के सम्बंध मं समाजवादी। उनका राष्ट्रवाद और समाजवाद वेदों से प्रमाणित था, जो सर्वे भवन्तु सुखिनः और सर्वे सन्तु निरामया पर आधारित था। दरअसल, दयानंद ऐसे युगान्तरकारी महामानव थे, जिनके रोम–रोम में मानवता का कल्याण और सच्चे ज्ञान–विज्ञान और संस्कृति का उत्कृष्ट दर्शन व्याप्त था। उनका हर कार्य समाज, संस्कृति, धर्म, विज्ञान और भाषा को बल देने वाला था। वे नागरीलिपि की जहां वकालत करते हैं वहीं पर उन्होंने हिंदी को 'आर्य भाषा' कह कर पुकारा और हिंदी में उन्होंने अपने मुख्य ग्रंथों की रचना की। धर्म, संस्कृति और मूल्य उनके जीवन के वैभव भी थे और शोध भी। उन्होंने वेद, धर्म, संस्कृति और जीवन–विज्ञान को तर्क, प्रमाण, विज्ञान और सत्य की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार किया। आर्यसमाज , परोपकारिणी सभा, गौ कृषियादि रक्षिणी सभा जैसी संस्थाएं उनके वैचारिक और धार्मिक संतान के रूप में नहीं जन्मी बल्कि सामाजिक उन्नति, जीवन दर्शन, मूल्यों की प्रतिष्ठा और वैदिक सांस्कृतिक चेतना की संवाहक बनकर भी कार्य कर रही हैं। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित चालिस पुस्तकों की रचना और वेदों का हिंदी में भाष्य कर भारतीय जनमानस को वेदों के ज्ञान को सुलभ कराने का युगान्तरकारी कार्य उन्हें युगश्रेष्ठ साबित करते हैं।

महर्षि दयानन्द के विलक्षण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में योगी श्री अरविन्द कहते हैं–'' जब मैं दयानन्द के विषय में अपनी भावना को अपने सामने चित्रित करने का प्रयत्न करता हूं और मुझ पर जो उनकी छाप पड़ी है, उसे ठीक–ठीक रूप देने की चेष्टा करता हूं तो प्रारम्भ में ही इस पुरुष के, इसके जीवन और कार्य के दो महान्, सुस्पष्ट और विलक्षण गुण मेरे सामने आ खड़े होते हैं। वे गुण इसे अपने समकालीन व्यक्तित्वों और साथियों से बिल्कुल अनूठा ही प्रदर्शित करते हैं।'' महर्षि दयानंद की कार्यशैली समकालीन अन्य महापुरुषों से अलग तरह की थी। यही वजह है कि वे सबसे निराले, अनुपम और विलक्षण दिखाई देते हैं। योगी श्री अरविन्द ने महर्षि दयानंद को जिस रूप में देखा, वह भी एकदम अलग और मौलिक था। यही वजह है कि उन्होंने दयानंद को किसी भी नजरिए से किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं पाया। श्री अरविन्द के ही शब्दों में –''महर्षि दयानंद की कार्यशैली बिलकुल भिन्न थी। वे ऐसे मानव थे जिन्होंने अपने आपको वस्तुओं की अनिर्धारित आत्मा में आकार–रहित तौर पर नहीं उँड़ेला था बल्कि वस्तुओं और मनुष्यों पर अपनी आकृति की ऐसी अमिट छाप लगा दी थी जैसे पीतल में मुहर लगा दी गई हो। वे इस प्रकार के पुरुष थे जिनके साकार कार्य उनके आत्मिक शरीर से उत्पन्न हुए उनकी सन्तान ही से थे–सुन्दर और बलिष्ठ तथा प्राण से परिपूर्ण, अपने जन्मदाता पिता की हू–बहू–अक्षत छवि। वे ऐसे व्यक्ति थे जो निश्चित तौर

पर और साफ–साफ जानते थे कि उन्हें क्या कार्य करने के लिए यहां भेजा गया है।''

महर्षि दयानन्द के कार्य, जीवन, धर्म और मूल्यों को समझने लिए यह जरूरी है कि उनके चरित्रबल, आत्मसाधना, वेदविद्या और शिव संकल्प को भी समझा जाए। गौरतलब है दृढ़व्रती मानव साधारण मानव नहीं होता है। वह युगधर्मी ऐसा महामानव होता है जिसका एक मात्र उद्देश्य सारी दुनिया का भला करना होता है। उसकी दृष्टि आने वाले सैकड़ों सालों पर होती है। इस लिए उसके कार्य, ज्ञान, विज्ञान, समाज सुधार, धर्म कल्याण और संस्कृति उन्नयन के कार्य उस समय असरदायक तो होते ही हैं शताब्दियों तक मानव जाति को प्रेरणा देने का कार्य करते हैं। महर्षि दयानंद के कार्य, विचार और उद्देश्य इसी तरह के थे। आज भी महर्षि के जीवन संदेश, दर्शन, कार्य विश्व मानवता के लिए प्रेरणा का कार्य कर रहे हैं। इतना ही नहीं, समाज व शिक्षा सुधार, संस्कृति व धर्म उन्नयन, भाषा, लिपि, स्वदेशी, शाकाहार, स्वावलम्बन, मानव व समाज में सद्गुण प्रतिस्थापना, असहाय और निर्धन समाज के कल्याण, गंदी प्रथाओं और अविद्या को मानव मन से हटाकर विद्या के प्रचार–प्रचार करने जैसे अनगिनत कार्य महर्षि दयानन्द ने उस समय किए जब देश अंग्रेजी पराधीनता में जकड़ा हुआ था। 'वेदों की ओर लौटों' का नारा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, स्वधर्म, स्वभाषाा, स्वदेशी स्थापना और वैदिक स्वशिक्षा को जन–जन तक पहुँचाने के मकसद से दिया। आज भी यह नारा भारतीय गौरव को हासिल करने और विदेशी गुलामी से पार पाने का हथियार बनाने की बात कही जा रही है। पाश्चात्य संस्कृति, शिक्षा और भाषा की गुलामी से मुक्त होने के लिए 'वेदों की ओर लौटों' का नारा हथियार बन सकता है। पश्चिमी दुनिया के संस्कृत के विद्वान मैक्समूलर ने महर्षि दयानन्द रचित ऋग्वेदाभिाष्यभूमिका और उनके जीवन–कार्यों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को हम ऋग्वेद से आरम्भ करके दयानंद की 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' तक दो भागों में बांट सकते हैं। गौरतलब है मैक्समूलर वैदिक ग्रंथों को महर्षि दयानन्द से मिलने के पहले महत्व नहीं देते थे। यह महर्षि दयानन्द के कार्यों का ही प्रभाव था कि मैक्समूलर जैसा भारतीय धर्म और संस्कृति के आलोचक ने भी वेदों की महत्ता को माना।

महर्षि दयानंद की दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। वह मत, मजहब, सम्प्रदाय और वर्ग–समूह व जाति–समूह से बहुत ऊँचे उठे हुए महामानव थे। विश्व समाज जिस दौर से आज गुजर रहा है, ऐसे में स्वामी दयानंद के वैदिक विचार अपने आप में इतने उपयोगी, व्यावहारिक और निष्पक्ष हैं कि यदि उन पर गौर किया जाए तो दुनिया की तमाम जटिलताएं, समस्याएं, विसंगतियां, हिंसा, विकृतियां, दुर्वृतियां और अनाचार खत्म हो सकती हैं। लेकिन जरूरत इस बात की है कि हम दयानन्द को दयानन्द की अंतर–दृष्टि को समझने की कूबत रखते हों। दयानन्द की सबसे बड़ी खाशियत यह है कि वे 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' को तहस नहस करते हुए कहते हैं कि यदि उनके विचार –किसी भी विषय या सन्दर्भ के हों यदि तत्कालीन समाज और मानवहित में नहीं समझ में आते तो विद्वान् और विचारक मिलकर उसमें सुधारकर लें, जिससे किसी तरह का किसी भी स्तर पर कोई नुकसान न हो। महर्षि दयानन्द के राम–रोम में वेद, भारत, वैदिक राष्ट्रवाद, वैदिक जीवन दर्शन और वैदिक मूल्य समाहित थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सभी तरह के हितकारी कार्यों को 'यज्ञ' कहकर प्रतिष्ठा दी।

महर्षि दयानन्द ने भारतीयता को स्वाधीनता, स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वधर्म, शाकाहार और आदर्श समाज निर्माण से जोड़कर देखा। वे सच्चे मायने में एक युगपुरुष, वैदिक ऋषि, स्वराज्य के प्रथम प्रणेता, सत्य के संस्थापक, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक और वैदिक गुरुकुल प्रणाली के संवाहक थे। दैवत्व और ऋषित्व उनके मुखमंडल पर दीप्तमान था। अपने हत्यारे को भी पैसा देकर दूर भाग जाने की घटना, उनकी दया और क्षमा का अद्भुत गुण है। वे राष्ट्र, समाज, वेद, जनहित, संस्कृति, भाषा, नारी व दलित कल्याण और विश्व के कल्याण के लिए जीवन भर तमाम परेशानियों के बीच भी कार्य करते रहे।

महर्षि दयानन्द युगधर्मी महामानव जिसने तत्कालीन विद्वत समाज, धर्म के धुरंधरों और विचारकों को ही नहीं उस वक्त के रजवाड़ों को भी नई दिशा दी, वह अपने किसी विचार को रूढ़ी में बाधना कभी अच्छा नहीं समझा। इस लिए दयानन्द एक जहां प्रगतिवादी हैं तो वहीं अत्यंत गंभीर तर्कवादी, जहां वे धर्म को तर्क पर कसकर स्वीकारने की बात करते हैं तो अध्यात्म को अपने अनुभव और क्रिया पर। मानव की भलाई जिसमें हो,

दयानंद उस बात को उस कार्य को सबसे बेहतर और हितकारी मानते दिखाई पड़ते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में जो भी उन्होंने लिखा उसमें उनका अपने स्वयं के फायदे का कुछ भी नहीं है,, सारा का सारा ज्ञान और तथ्य मानव समाज के सुधार, सुख, शांति, आपसी प्रेम, करुणा, दया, सहिष्णुता, न्याय, अहिंसा की स्थापना, सत्य की जीत और शुभत्व को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत किया। दुराग्रह,आग्रह, स्वार्थ और पक्षधारिता का दूर दूर तक दयानंद के जीवन में हम नहीं पाते हैं।

महर्षि दयानन्द अपने भ्रमण और कार्यों के दौरान यदि मुस्लिम नेताओं के यहां टिकते थे तो ईसाई और पारसी के यहां भी रहकर उपदेश देते थे। कोई ऐसा व्यक्ति या वर्ग नहीं था जो दयानंद के बारे में यह कह सके कि उन्होंने उसके साथ भेदभाव किया या अन्याय किया। इस लिए दयानन्द को आज के संदर्भ में हमें उनके समग्र विचारों, कार्यों, व्यवहारों और चरित्र को पूरी तरह निष्पक्ष और अपने आग्रह–दुराग्रह से अलग हटकर समझने की जरूरत है।

******

www.vedyog.net

योगदर्शन के प्रथम पाद – समाधिपाद पर योगसूत्रों और उनके व्यासभाष्य पर आधारित ५० प्रश्नों की प्रश्नमाला हमारी www.vedyog.net website पर online test के रूप में उपलब्ध है। हम हिन्दी एवम अंग्रेजी दोनों माध्यम से परीक्षा दे सकते है। इसमें हर प्रश्न के उत्तर हेतु ४ विकल्प दिए गए हैं। जिसमें आपको सही विकल्प को चुनना है। परीक्षा के माध्यम से हम अपने योगदर्शन से संबंधित ज्ञान की स्थिति का आकंलन कर पायेंगे।

अनादि अनंत व्याप्त दिग्दिगंत में
उसी से जीव का होता आदि अंत
सारे ब्रह्मांड की रचना है उसी की
पाने को व्याकुल हैं उसे साधु संत।

सतत सर्व व्यापक है उसकी सत्ता
जीव प्रकृति है सब उसके अधीन
कोई दूर नहीं है उसकी सत्ता से
पल पल बनाता है ऊतके नवीन।

नित दिख रहे हैं जग में आदि अंत
स्वयं के आदि अंत का पता नहीं
हम कहां से आए हैं कहां जाएंगे
कोई तो कुछ बता दे हमको सही।

जीवन–मरण किसी के वश में नहीं
न आत्मा की है किसी को पहचान
भ्रमित कर कुछ कहते हैं ऐसे जैसे
किए हैं वे परमात्मा का अनुसंधान।

मरण धर्मा क्या होगा कभी अमर
अमरता पंचतत्व की नहीं पहचान
जो जैसा है उसको वैसा ही जानो
यही है जग–जीवन में सत्य ज्ञान।

अनादि अनंत ईश्वर,जीव, प्रकृति
सब जीव हैं जगतपिता के संतान
कर्मानुसार मिलता विभिन्न योनि
उत्तम कर्म करने का रहे हमें ध्यान।

तीन उंगली कटाकर भागा

– ✍ श्री.हो.वे.शेषाद्रि

शिवाजी महाराज के किलों में पुणे का लाल महल बहुत महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने बचपन का बहुत सा समय वहाँ बिताया थाय पर इस समय उस पर औरंगजेब के मामा शाइस्ता खाँ का कब्जा था। उसके एक लाख सैनिक महल में अन्दर और बाहर तैनात थेय पर शिवाजी ने भी संकटों से हार मानना नहीं सीखा था। उन्होंने स्वयं ही इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया।

6 अप्रैल, 1663 (चौत्र शुक्ल 8) की मध्यरात्रि का मुहूर्त इसके लिए निश्चित किया गया। यह दिन औरंगजेब के शासन की वर्षगाँठ थी। उन दिनों मुसलमानों के रोजे चल रहे थे। दिन में तो बेचारे कुछ खा नहीं सकते थेय पर रात में खाने–पीने और फिर सुस्ताने के अतिरिक्त कुछ काम न था। इसी समय शिवाजी ने मैदान मारने का निश्चय किया। हर बार की तरह इस बार भी अभियान के लिए सर्वश्रेष्ठ साथियों का चयन किया गया।

तीन टोलियों में सब वीर चले। द्वार पर पहरेदारों ने रोकाय पर बताया कि गश्त से लौटते हुए देर हो गयी है। शाइस्ता खाँ की सेना में मराठे हिन्दू भी बहुत थे। अतः पहरेदारों को शक नहीं हुआ। द्वार खोलकर उन्हें अन्दर जाने दिया गया। सब महल के पीछे पहुँच गये। माली के हाथ में कुछ अशर्फियाँ रखकर उसे चुप कर दिया गया। शिवाजी तो महल के चप्पे–चप्पे से परिचित थे ही। अब वे रसोइघर तक पहुँच गये।

रसोई में सुबह के खाने की तैयारी हो रही थी। हिन्दू सैनिकों ने चुपचाप सब रसोइयों को यमलोक पहुँचा दिया। थोड़ी सी आवाज हुईय पर फिर शान्त। दीवार के उस पार जनानखाना था। वहाँ शाइस्ता खाँ अपनी बेगमों और रखैलों के बीच बेसुध सो रहा था। शिवाजी के साथियों ने वह दीवार गिरानी शुरू की। दो–चार ईंटों के गिरते ही हड़कम्प मच गया। एक नौकर ने भागकर खाँ साहब को दुश्मनों के आने की खबर की।

यह सुनते ही शाइस्ता खाँ के फरिश्ते कूच कर गयेय पर तब तक तो दीवार तोड़कर पूरा दल जनानखाने में आ घुसा। औरतें चीखने–चिल्लाने लगीं। सब ओर हाय–तौबा मच गयी। एक मराठा सैनिक ने नगाड़ा बजा दिया। इससे महल में खलबली मच गयी। चारों ओर 'शिवाजी आया, शिवाजी आया' का शोर मच गया। लोग आधे–अधूरे नींद से उठकर आपस में ही मारकाट करने लगे। हर किसी को लगता था कि शिवाजी उसे ही मारने आया है।

पर शिवाजी को तो शाइस्ता खाँ से बदला लेना था। उन्होंने तलवार के वार से पर्दा फाड़ दिया। सामने ही खान अपनी बीवियों के बीच घिरा बैठा काँप रहा था। एक बीवी ने समझदारी दिखाते हुए दीपक बुझा दिया। खान को मौत सामने दिखायी दी। उसने आव देखा न ताव, बीवियों को छोड़ वह खिड़की से नीचे कूद पड़ाय पर तब तक शिवाजी की तलवार चल चुकी थी। उसकी तीन उँगलियाँ कट गयीं। अंधेरे के कारण शिवाजी समझे कि खान मारा गया। अतः उन्होंने सबको लौटने का संकेत कर दिया।

इसी बीच एक मराठे ने मुख्य द्वार खोल दिया। शिवाजी और उनके साथी भी मारो–काटो का शोर मचाते हुए लौट गये। अब खान की वहाँ एक दिन भी रुकने की हिम्मत नहीं हुई। वह गिरे हुए मनोबल के साथ औरंगजेब के पास गया। औरंगजेब ने उसे सजा देकर बंगाल भेज दिया।

अगले दिन श्रीरामनवमी थी। माता जीजाबाई को जब शिवाजी ने इस सफल अभियान की सूचना दी, तो उन्होंने हर्ष से पुत्र का माथा चूम लिया।

सकारात्मक सोच ही, मुख्य धर्म आधार ।
नकारात्मक सोचना, धर्म न किसी प्रकार ।।
धर्म न किसी प्रकार, दया, करुणा हो जिसमें ।
ईश्वरीय अभिव्यक्ति, मुख्य करुणा ही इसमें ।।
कह 'अनंग' करजोरि, चीज यह भावनात्मक ।
शुचि, अध्यात्मिक व्यक्ति, सोचता सकारात्मक।।

– अनंग पाल सिंह भदौरिया'अनंग'

सत्य पथ के बलिदानी महाशय राजपाल

पूरे संसार को 'दारुल इस्लाम' बनाने का दु:स्वप्न देखने वाले कट्टरपंथी प्राय: अन्य धर्मावलंबियों की भावनाओं का अनादर कर अपनी संकीर्णता का परिचय देते रहते हैं। 1920 में लाहौर में कुछ मुसलमानों ने दो पुस्तकें प्रकाशित कीं। 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' में श्रीकृष्ण को चरित्रहीन बताते हुए उन पर भद्दी टिप्पणियां की गयीं थीं। इसी प्रकार 'बीसवीं सदी का महर्षि' में आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानंद पर तीखे कटाक्ष किये गये थे।

आर्य विद्वान पंडित चमूपति जी को लगा कि यदि इनका उत्तर नहीं दिया, तो जहां एक ओर कठमुल्लाओं का साहस बढ़ेगा, वहीं दूसरी ओर हिन्दुओं का मनोबल भी गिरेगा। उन्होंने भी 'रंगीला रसूल' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद के 12 निकाहों का सप्रमाण वर्णन था।

इस पुस्तक को प्रकाशित करना आसान नहीं थाय पर 'आर्य पुस्तकालय' के महाशय राजपाल ने लेखक के नाम बिना उसे प्रकाशित कर दिया। उन्होंने लेखक को यह आश्वासन भी दिया था कि चाहे कितना भी संकट आयेय पर वे उनका नाम प्रकट नहीं करेंगे।

पुस्तक के प्रकाशित होते ही मुसलमानों में हलचल मच गयी। उन्होंने लेखक व प्रकाशक को धमकियां देनी प्रारम्भ कर दीं। उर्दू के समाचार पत्रों में ऐसे धमकी भरे लेख छपने लगेय पर महाशय जी ने सारी जिम्मेदारी स्वयं लेते हुए लेखक का नाम प्रकट नहीं किया।

एक दिन महाशय जी अपने प्रकाशन में बैठे थे कि खुदाबख्श नामक पठान वहां आया। उसने महाशय जी पर छुरे से प्रहार शुरू कर दिये। अचानक स्वामी स्वतंत्रानंद जी वहां आ पहुंचे। उन्होंने खुदाबख्श को दबोच कर पुलिस के हवाले कर दिया। महाशय जी को अस्पताल पहुंचाया गया। जहां से ठीक होकर वे फिर अपने काम में लग गये। खुदाबख्श को सात साल की सजा हुई।

कुछ दिन बाद एक अन्य उन्मादी मुसलमान ने प्रकाशन में बैठे स्वामी सत्यानंद जी को महाशय जी समझ कर उनकी हत्या का प्रयास कियाय उसे भी लोगों ने पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। लाहौर के मुसलमान किसी भी तरह महाशय राजपाल जी को मारना चाहते थे। उन पर इस पुस्तक के लिए लाहौर उच्च न्यायालय में मुकदमा भी चलाया गयाय पर पुस्तक पूरी तरह मुस्लिम इतिहास ग्रंथों पर ही आधारित थी। अत: न्यायालय ने महाशय जी को बरी कर दिया। इसके बाद पुन: उनकी हत्या का षड्यन्त्र बुना जाने लगा।

6 अप्रैल, 1929 को महाशय जी अपने प्रकाशन में बैठे थे कि इलमदीन नामक एक उन्मादी ने हमला कर महाशय जी की हत्या कर डाली। भागते हुए हत्यारे को विद्यारत्न नामक युवक ने पीछा कर पकड़ लिया और पुलिस को सौंप दिया। महाशय जी की हत्या का समाचार आग की तरह फैल गया। उनकी शवयात्रा में हजारों हिन्दू शामिल हुए।

उनके बच्चे बहुत छोटे थे। अत: डी.ए.वी. संस्थाओं के संचालक महात्मा हंसराज जी ने मुखाग्नि दी। स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने अंतिम प्रार्थना कराई। महाशय जी की धर्मपत्नी सरस्वती जी ने कहा कि अपने पति के मारे जाने का मुझे बहुत दुख हैय पर यह गर्व भी है कि उन्होंने धर्म और सत्य के लिए बलिदान दिया।

विभाजन के बाद महाशय जी के परिजन दिल्ली आकर प्रकाशन के काम में ही लग गये। जून 1998 में दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने पहले 'फ्रीडम टु पब्लिश' पुरस्कार से स्वर्गीय राजपाल जी को सम्मानित किया। पुरस्कार उनके पुत्र विश्वनाथ जी ने ग्रहण किया।

[लेख सन्दर्भ : पांचजन्य ५.४.२००६]

आर्ष क्रान्ति पत्रिका के लिए आर्य लेखक बन्धु अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ भेंजे।

अवधि कहानी

इ डगरा

–✍ए.के.कुमार

''ओनकर डगरा देखत–देखत अंखिया पाथर होइ गइ ब। पता नाहीं कब उ अइहइ। आउर एकर..इ हिया बइठे–बइठे बस हुकुम चलावइ क काम ब। पता नाहीं कब मरे आउर माचा छोड़े इ।'' मालती झुझालाइ का सासू पर फाट पड़ी।

बूढ़िया पतोहू क ताना सुनि कछु बोली नाहीं। आचर से मुंह छिपाए मूड़ नीचे करि सुसकइ लागी। थोरि बखत गुजरा होइ, , बूढ़ी पुनि मन..मन पतोहू अउर दोनउ पोतन क मंगल मनाइ लागी।

छोटका बेटवा राम बरन माई का इ हालत देखि क बहुत दूखी भवा, मुला क कर सकत उ। ओकर त ओकरे घर में कोनउ ओकत नाहीं ब। उ मन–मन सोचइ लाग....बखत का बात अहइ। कबउ घुरहवा क दिन बहुरे। माई का ओह बात याद आइ गइ...बेटवा सबुर का फल बहुत मीठ होत अहइ। डगरा निहारइ का होत हइ। दुइ गदेला न होत तो.....आजु इ हालत न होतइ।

मालती सासू क चेहरा देखइ का राजी नाइ। रोजु–रोजु का चमरउट से पिंड छुड़ावइ का अइसा जुवाड़ क सापउ मरि जाइ आउर लठिया नीमन बची रहे।

.....अरे हऽऽ.....दुबरुआ का कार से बूढ़िया का फरक्ते करइ का बढ़िया सरंजाम होइ सकत अहइ। उ रकेसवा कहत रहा न.....ओकरे आफिसिया के डगरा में एक बुढ़ियन अउर बुढ़वा का ठिकाना ब। कोनउ बाबू साहेब का अहइ उ। बस, उ बाबू से मिलि के आपन काम होइ जाय। पिन्टुअउ शहरि घूम आइ और मोरउ बहुत दिनन का अरमान पूराइ जाए। मलतिया सोचत–सोचत उछलि पड़ी।

''इ का बार–बार कार से मुंह बाहर निकासत क देखत बाटे पिंटुआ?.. कोनउ बड़ चीज अहइ का रे?'' मलतिया चिढ़ क बोल पड़ी।

''नाहीं अम्मा, हम इ देखत बाटी...की जोनउ डगरा से बुढ़िया माइ का तू लइ जात बाटू..... उ डगरवा का निहात बाटी। कल जब तू बुढ़इबु तउ डगरवा देखे रहब त... तोहका इ ही डगरा से छोड़इ आउब न....।'' पिंटुआ समझदार जइसन बोलि पड़ा।

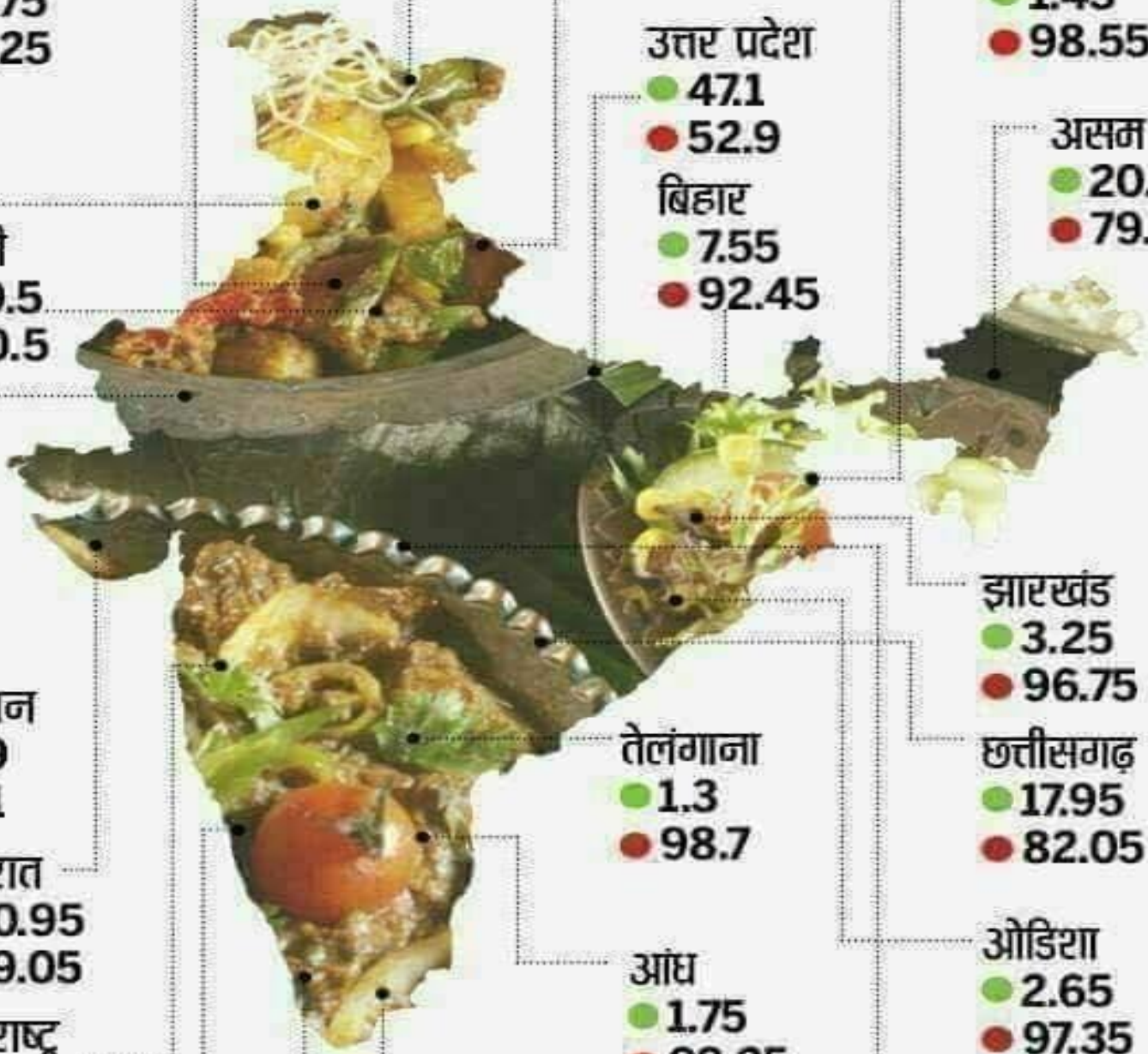
''इ कहत बाटे पिंटुआ.....माइ क हाल मोरे साथे तू करबे? क तोहके पालि–पोस क बड़ा इहइ करइ बदे कस्ट सहत हई?'' मलतिया तुनक क बोली।

''अम्मा! माइ तउ बाबू और काका का पालि–पोस के बड़ा करेन रहिन। क इहइ दिन के बदे ओ पालि–पोसे रहिन बाबू अउर काका क? जोन डगरा तू माइ का लइ जात बाटू उहइ डगरा प तोहका लइ जाइ क बात नागवर लागि गा न। माइ क करेजा आजु क कहत ब, सोचबू त समझ पइबू।''

–''लौउटाव ल डाइबर सहेब .....गलति होइ ग...हम माइ क माई न समझ करि घर क पुरान हड़िया समझ बइठी। हमार मति मारी गइ...आउर क।

कौन सा राज्य क्या खाता है?

● शाकाहारी ● मांसाहारी सभी आंकड़ेः % में



पंजाब
66.75
33.25

हरियाणा
69.25
30.75

जम्मू-कश्मीर
31.45
68.55

उत्तराखंड
27.35
72.65

पश्चिम बंगाल
1.45
98.55

उत्तर प्रदेश
47.1
52.9

असम
20.6
79.4

बिहार
7.55
92.45

दिल्ली
39.5
60.5

झारखंड
3.25
96.75

राजस्थान
74.9
25.1

तेलंगाना
1.3
98.7

छत्तीसगढ़
17.95
82.05

गुजरात
60.95
39.05

ओडिशा
2.65
97.35

आंध
1.75
98.25

महाराष्ट्र
40.2
59.8

मध्य प्रदेश
50.6
49.4

तमिलनाडु
2.35
97.65

कर्नाटक
21.1
78.9

केरल
3
97

Source: Sample Registration System Baseline Survey